

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 8a, इब्रानियों 9:1-10:18: मसीह हमारा प्रायश्चित (भाग 1)

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

इब्रानियों के अध्याय 9, पद 1 से अध्याय 10, पद 18 में, उपदेशक अध्याय 7 और 8 में संबोधित किए गए प्रश्नों के आधार पर दो अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों की ओर मुड़ता है। सबसे पहले, यीशु की मृत्यु और स्वर्गारोहण का क्या अर्थ है यदि हम इसे मलिकिसिदक की वंशावली में एक पुजारी के कार्य के रूप में समझते हैं? और दूसरा, उन लोगों के लिए क्या परिणाम हैं जो लेवी के याजकों की मध्यस्थता के बजाय यीशु की मध्यस्थता के माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं? 9 पद 1 से 10 में, लेखक तम्बू या मंदिर की स्थानिक व्यवस्था को देखता है और उसमें लेवी के पुजारी प्रणाली और इसे नियंत्रित करने वाले कानून के आवश्यक दोष की पहचान करता है। ये महायाजक से परे पूरे लोगों के लिए परमेश्वर की उपस्थिति तक पहुँच को व्यापक बनाने में असमर्थ थे। अध्याय 9, पद 11 से 14 में, लेखक मसीह के स्वर्गारोहण को प्रायश्चित अनुष्ठान के एक अंतिम प्रभावी दिन को करने के लिए स्वर्गीय परम पवित्र में प्रवेश के रूप में देखता है।

वह पशु बलि के रक्त के संबंध में कम से कम तर्क का उपयोग करता है, जो केवल इतना ही प्रभावी है, और यीशु का रक्त, जो कहीं अधिक शक्तिशाली होना चाहिए, एक अनुष्ठान डिटर्जेंट, जैसा कि यह पाप की अशुद्धता को दूर करने के लिए था। वह 9, श्लोक 15 से 22 में अपने व्याख्यात्मक ढाँचे को लेविटिकस 16 में प्रायश्चित अनुष्ठान के दिन से लेकर निर्गमन अध्याय 24 में पाए गए वाचा उद्घाटन अधिकार तक स्थानांतरित करता है। सिनाईटिक वाचा को आरंभ करने के लिए मूसा ने जो अधिकार निभाया, वह मसीह की मृत्यु और स्वर्गीय पवित्र स्थान में उनके स्वर्गारोहण को एक अनुष्ठान कार्य के रूप में समझने के लिए दूसरा टेम्पलेट बन जाता है जो यिर्मयाह 31 में घोषित नई वाचा को आरंभ करता है।

अध्याय 9 के अंतिम छंदों में, छंद 23 से 28 तक, लेखक प्रायश्चित अनुष्ठान के दिन के ढाँचे में लौटता है क्योंकि वह मसीह के स्वर्गीय पवित्र स्थान में प्रवेश को सांसारिक उच्च पुजारी के कार्य के लौकिक समतुल्य के रूप में मानता है जो बैल और बकरे के खून के साथ सांसारिक परम पवित्र स्थान में प्रवेश करता है ताकि दया के आसन से पाप की अशुद्धता को दूर किया जा सके। लेखक तर्क देगा कि मसीह का मृत्यु तक आज्ञाकारिता के बाद स्वर्ग में प्रवेश प्रभावी रूप से परमेश्वर की उपस्थिति से पाप की अशुद्धता की याद को हटा देता है। अध्याय 10, छंद 1 से 10 में, लेखक लेवी प्रणाली में बलिदानों की पुनरावृत्ति के विषय पर लौटता है ताकि तर्क दिया जा सके कि समान बलिदानों की यह वार्षिक पुनरावृत्ति पाप और अशुद्धता से निपटने में उनकी अप्रभावीता को इंगित करती है जो लोगों को परमेश्वर से दूर रखती है।

फिर वह भजन 40, श्लोक 6 से 8 की ओर मुड़ता है, जो एक प्रभावशाली बलिदान के लिए एक शास्त्र वारंट के रूप में है जिसे यीशु एक बार और हमेशा के लिए खुद को अर्पित करके करेगा। लेखक अध्याय 10, श्लोक 11 से 18 में यीशु की पुरोहित सेवकाई पर इस केंद्रीय खंड का समापन भजन 110, श्लोक 1 को फिर से देखकर करता है, जहाँ यीशु को पुरोहिती में अपनी नियुक्ति के संबंध में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

उपदेशक यहाँ यीशु के बैठने में मसीह की भेंट की प्रभावशीलता का प्रमाण पाता है क्योंकि लेवी के पुजारी अपनी पुरोहिती सेवा में लगातार खड़े रहने के लिए जाने जाते हैं।

लेकिन यह तथ्य कि यीशु परमेश्वर के बगल में बैठते हैं, उपदेशक द्वारा इस बात के प्रमाण के रूप में लिया जाता है कि यीशु का पुरोहिती कार्य निर्णायक रूप से पूरा हो चुका है और इसे कभी भी दोहराने की आवश्यकता नहीं होगी। वह यिर्मयाह अध्याय 31, श्लोक 33 और 34 को एक तरह के क्यूईडी के रूप में फिर से पढ़कर समाप्त करता है, जैसे कि यह कहना हो, मैंने अपनी बात साबित कर दी है, यह दिखाते हुए कि वास्तव में मसीह में, उपासक के विवेक और स्वर्ग में सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपस्थिति दोनों से पापों का निर्णायक निष्कासन अंततः पूरा हो गया है। अध्याय 9, श्लोक 1 से 10 में, लेखक सांसारिक तम्बू की व्यवस्था पर करीब से नज़र डालता है और ठीक-ठीक पहचानता है कि समस्या क्या थी और पहली वाचा के बारे में क्या दोषपूर्ण था।

लेखक ने पहले ही अध्याय 7, श्लोक 11 और 19 में इस बात का संकेत दे दिया है। टोरा के धार्मिक नियम और उसके पुरोहिती पूर्णता लाने में असमर्थ थे। अर्थात्, वे उपासकों के विवेक को शुद्ध करने में असमर्थ थे, ताकि वे उपासक पूरी तरह से ईश्वर के करीब आ सकें और न केवल सांसारिक निवासस्थान में बल्कि स्वर्गीय प्रोटोटाइप, स्वर्गीय पवित्र स्थान में जा सकें जहाँ ईश्वर निवास करते हैं।

अब लेखक पंथ सेवा के लिए नियमों और सांसारिक मंदिर, सांसारिक मंदिर के लेआउट पर विचार करके उस आरोप की व्याख्या प्रदान करेगा, जो पहले वाचा द्वारा निर्धारित किए गए थे। और इसलिए हम पढ़ते हैं, अब पहली वाचा में भी पूजा और सांसारिक अभयारण्य के लिए नियम थे। एक तम्बू बनाया गया था, पहला, जिसमें दीवट, मेज और उपस्थिति की रोटी शामिल थी।

इसे पवित्र स्थान कहा जाता है। दूसरे पर्दे के पीछे एक तम्बू था जिसे परम पवित्र स्थान कहा जाता था। इसमें धूप की सोने की वेदी और चारों तरफ सोने से मढ़ा हुआ वाचा का संदूक था, जिसमें मन्ना रखने वाला सोने का कलश, हारून की छड़ी जिसमें फूल खिले थे, और वाचा की पटियाँ थीं।

इसके ऊपर महिमा के करूब थे जो दया के आसन को ढक रहे थे। इन चीजों के बारे में, हम अभी विस्तार से बात नहीं कर सकते। उस अंतिम अस्वीकरण के साथ, लेखक संकेत देता है कि वह मंदिर के साज-सामान के आध्यात्मिक महत्व या अर्थ के बारे में अटकलें नहीं लगाने जा रहा है, उदाहरण के लिए, अलेक्जेंड्रिया के फिलो के विपरीत।

जब फिलो ने तम्बू के लेआउट के बारे में लिखा, तो उसने तम्बू में मौजूद हर फर्नीचर के रूपक, नैतिक और आध्यात्मिक महत्व को विस्तार से बताया। हालाँकि, हमारे लेखक को स्थानिक व्यवस्थाएँ और ईश्वर तक पहुँच की सीमाएँ दिलचस्प लगती हैं, जो इन व्यवस्थाओं के कारण बनी रहीं, जैसा कि वह श्लोक 6 और 7 में आगे कहता है। ऐसी तैयारियाँ करने के बाद, पुजारी अपने अनुष्ठान कर्तव्यों को पूरा करने के लिए लगातार पहले तम्बू में जाते हैं, लेकिन केवल महायाजक ही दूसरे तम्बू में जाता है, और वह भी साल में एक बार, और वह भी अपने लिए और लोगों द्वारा अनजाने में किए गए पापों के लिए चढ़ाए गए रक्त को लिए बिना नहीं। पहली वाचा ने जिस

केंद्रीय समस्या को दूर करने के बजाय उसे कायम रखा, वह इस लेखक के लिए ईश्वर तक पहुँच में क्रमिकता प्रतीत होती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि इस्राएलियों का बड़ा हिस्सा केवल इतनी दूर तक, परमेश्वर के इतने करीब तक ही जा सकता था, और फिर उसे रुकना पड़ता था। याजकों का बड़ा हिस्सा केवल इतनी दूर तक ही परमेश्वर की ओर जा सकता था और फिर उसे रुकना पड़ता था। केवल महायाजक ही परम पवित्र स्थान में जा सकता था, जो परमेश्वर की वास्तविक उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करता था, और फिर उसे वर्ष में केवल एक बार ऐसा प्रवेश करने की अनुमति थी।

पुजारी बाहरी कक्ष में अपने कर्तव्यों का पालन करते थे, दीवट की देखभाल करते थे और पवित्र रोटियों, शोब्रेड को बदलते थे। निर्गमन 30 श्लोक 7 और 8 के अनुसार, पुजारी धूप की वेदी पर धूप भी चढ़ाते थे, हालाँकि इब्रानियों के लेखक द्वारा इस लेखक को आंतरिक कक्ष में रखना इस संबंध में समस्याग्रस्त होगा। यह स्थान, आगे का कक्ष, जहाँ भगवान के रहने के बारे में सोचा गया था, हर साल केवल एक ही व्यक्ति, महायाजक, प्रायश्चित्त के दिन प्रवेश करता था, जब वह परम पवित्र स्थान में उस रक्त को ले जाता था जो पहले उसके अपने पापों और फिर लोगों के पापों को ढकता था, और फिर केवल उन पापों को जो अनजाने में या अज्ञानता में किए गए थे।

लैव्यव्यवस्था 16 में विस्तार से वर्णित यह अनुष्ठान, इस पूरे खंड में लेवी के उच्च पुजारियों की गतिविधि और यीशु की उपलब्धि पर लेखक के चिंतन के लिए एक आवश्यक पृष्ठभूमि है। आम इस्राएली, साधारण पुजारी और उच्च पुजारी पवित्रता के तीन स्तरों, शुद्धता आवश्यकताओं के पालन के तीन स्तरों का प्रतिनिधित्व करते थे, और प्रत्येक स्तर के साथ परमेश्वर की पवित्रता की भयानक उपस्थिति के करीब जाने का अतिरिक्त विशेषाधिकार और खतरा आता था। पुजारी पद अपने आप में परमेश्वर तक पहुँचने में बाधा नहीं था, लेकिन यह साधारण उपासक की परमेश्वर तक पहुँच को बेहतर बनाने में भी सक्षम नहीं था।

इसलिए, प्रथम वाचा के पंथ संबंधी नियमों ने यह सुनिश्चित किया कि राष्ट्र ईश्वर से अपनी दूरी बनाए रखे, अतिक्रमण के लिए दंड की एक बाड़ का निर्माण किया और परम पवित्र स्थान के चारों ओर निषेध की आभा का निर्माण किया ताकि ईश्वर की पवित्रता की रक्षा की जा सके, या अधिक सटीक रूप से, राष्ट्र को उनकी अशुद्धता के विरुद्ध ईश्वर की पवित्रता के प्रकोप से बचाया जा सके। इब्रानियों के लेखक इस व्यवस्था को असंतोषजनक मानते हैं। वह समझता है कि ईश्वर का अपने लोगों के बीच रहने का वादा सभी लोगों के साथ बहुत अधिक घनिष्ठ संबंध का संकेत देता है और इस प्रकार, एक ऐसा संबंध जो प्रथम वाचा के तहत पूरा नहीं हुआ।

वह प्रकाशितवाक्य के लेखक यूहन्ना द्रष्टा में एक समान भावना पाता है, जो परमेश्वर की आशा की पूर्ति के लिए नए यरूशलेम की प्रतीक्षा करता है। हम वहाँ पढ़ते हैं कि यूहन्ना के नए यरूशलेम में, परमेश्वर तक पहुँचने के लिए क्रमिक पहुँच के कारण विशेष रूप से कोई मंदिर नहीं है, और परमेश्वर तक पहुँचने की सीमाएँ समाप्त कर दी गई हैं। इस प्रकार, हमारे लेखक इब्रानियों 9, आयत 8 से 10 में अपनी बात पर पहुँचते हैं।

प्रथम टाबर्नेकल की धार्मिक व्यवस्थाएँ, ईश्वर की उपस्थिति के लिए सीमाओं और बाधाओं के अपने सतत रखरखाव के साथ, एक वाहन हैं, उद्घरण, जो वर्तमान समय के लिए एक आकृति है, अभी भी धार्मिक स्थिति है, जिसमें कक्ष उपहार और बलिदान चढ़ाए जा रहे हैं जो उपासक को उसके विवेक के संबंध में पूर्ण नहीं कर सकते हैं, केवल खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों और विभिन्न स्नानों के मामले हैं, शरीर तक सीमित नियम, चीजों को सही करने के समय तक प्रभावी होते हैं। फिर भी महत्वपूर्ण है। पवित्र स्थानों में जाने का रास्ता अभी तक नहीं दिखाया गया है।

लेखक उस दिन का इंतजार कर रहा है जब अंदर जाने का रास्ता स्पष्ट हो जाएगा, जैसा कि हम अध्याय 10, श्लोक 19 से 20 में पढ़ेंगे, और अध्याय 12, श्लोक 26 से 28 में और भी स्पष्ट रूप से। यह वह दिन है जब भौतिक सृष्टि को हिलाकर हटा दिया जाएगा, उस दिन अदृश्य क्षेत्र में जाने का रास्ता खुल जाएगा और उन लोगों के लिए स्पष्ट हो जाएगा जो मसीह के बलिदान द्वारा उसमें प्रवेश करने के लिए तैयार हो चुके हैं। यहाँ, लेखक दावा करता है कि पवित्र आत्मा ने तम्बू की व्यवस्था के माध्यम से स्पष्ट कर दिया है कि परम पवित्र स्थान में जाने का रास्ता अभी तक प्रकट नहीं हुआ है, जबकि उस पहले तम्बू में पंथीय स्थिति है, जिसे वह वर्तमान समय के लिए एक दृष्टांत कहता है।

कहा जाता है कि पहले तम्बू का एक रूपकात्मक महत्व है। यह वर्तमान समय की ओर इशारा करने वाला एक दृष्टांत है। यह कोष्ठकीय टिप्पणी पहले तम्बू के लेआउट में एक ब्रह्माण्ड संबंधी आयाम जोड़ती है, जिसे अध्याय 12, श्लोक 26 से 28 में फिर से स्पष्ट किया जाएगा।

बाहरी तम्बू, पवित्र स्थान, वर्तमान युग का प्रतीक है जब दृश्यमान सृष्टि स्वयं अभी भी स्वर्गीय, स्थायी, अदृश्य क्षेत्र में प्रवेश को छिपाती है जिसका प्रतिनिधित्व दूसरे कक्ष द्वारा किया जाता है। रास्ता तब स्पष्ट हो जाएगा जब वह पहला कक्ष, यानी यह दृश्यमान सृष्टि हिलाई जाएगी और हटाई जाएगी ताकि जो अडिग है वह बना रहे। इस मार्ग में आवश्यक बिंदु, एक बार फिर, लेवी के बलिदानों की विफलता के साथ जुड़ा हुआ है जो पूरे लोगों के बीच परमेश्वर तक पहुँच को व्यापक बनाने में विफल रहे हैं।

जैसा कि लेखक लिखते हैं, इस तम्बू में, ऐसे बलिदान चढ़ाए जाते हैं जो विवेक के मामले में उपासक को पूर्ण नहीं कर पाते। अर्थात्, वे उपासक के विवेक को ईश्वर द्वारा नियुक्त लक्ष्य तक नहीं पहुँचा पाते, जिससे उपासक को विनाश के भय के बजाय अनुग्रह की प्रत्याशा में ईश्वर की उपस्थिति में खड़े होने की अनुमति मिलती है। यह तथ्य कि कई बलिदानों ने उपासकों को अभी भी हमेशा के लिए बाहर ही खड़ा रहने दिया, हमारे लेखक के लिए पूरी व्यवस्था की अप्रभावीता को साबित करता है।

इसलिए, वह लिखता है कि बलिदानों में केवल बल होता है, जिसे वह खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों तथा विभिन्न स्नान या अनुष्ठान शुद्धिकरण के संबंध में उद्धृत करता है, जो शरीर के लिए लागू नियम हैं, जो नवीनीकरण के समय या चीजों को सही करने के समय तक लागू होते हैं। लेखक पहले वाचा के नियमों की आलोचना करते हुए कहते हैं कि वे केवल शरीर के नियम हैं, भोजन से संबंधित नुस्खे, जैसे कि टोरा के आहार नियम या शरीर के शुद्धिकरण संबंधी स्नान, जो

आंतरिक व्यक्ति को पवित्र करने की शक्ति प्रदान करने में असमर्थ हैं। हालाँकि, लेखक के लिए, सुधार का समय, चीजों को सही करने का समय पहले ही आ चुका है।

यीशु के लिए, महायाजक पहले ही स्वर्गीय तम्बू में प्रवेश कर चुका है और यिर्मयाह 31 की नई वाचा को स्थापित कर चुका है। पहला तम्बू पहले ही अपना पंथीय स्थान खो चुका है, जैसा कि भजन संहिता 40, पद 6 से 8 के लेखक की व्याख्या, अध्याय 10 में थोड़ी देर बाद प्रदर्शित करेगी। इब्रानियों 9, पद 7, ने प्रायश्चित के दिन के अनुष्ठान को लेवीय महायाजकों के कार्य और मलिकिसिदक की वंशावली में याजक, अर्थात् यीशु के कार्य की तुलना के लिए संदर्भ के ढांचे के रूप में स्थापित किया है।

चूँकि प्रायश्चित दिवस का अनुष्ठान इन अध्यायों में लेखक की व्याख्या के लिए एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि है, इसलिए हमें एक पल के लिए रुककर इस्राएल के जीवन में उस बहुत ही महत्वपूर्ण अनुष्ठान के विभिन्न चरणों के बारे में अपनी यादों को ताज़ा करना चाहिए। प्रायश्चित दिवस के अनुष्ठान में पहला प्रमुख धार्मिक आंदोलन यह है कि महायाजक अपने और अपने परिवार के लिए पापबलि के रूप में एक बैल का वध करता है। वह धूपदान में परम पवित्र स्थान में धूप जलाता है, और उस बैल के खून से दया आसन को छिड़कता है।

दूसरे चरण में, महायाजक दो बकरे चुनता है और लोगों के लिए पापबलि के रूप में एक का वध करता है। फिर से, वह परमपवित्र स्थान में प्रवेश करता है और उस बकरे के खून को दया के आसन पर छिड़कता है, जिससे लोगों के पापों का प्रायश्चित होता है। महायाजक बैल और बकरे दोनों के खून को होमबलि की वेदी के चारों कोनों पर लगाता है।

फिर महायाजक दूसरे बकरे को पेश करता है, उस पर हाथ रखता है, उसके सिर पर लोगों के सभी पापों को स्वीकार करता है, और उस बकरे को शिविर से बाहर भेज देता है। बकरे को कोई व्यक्ति रेगिस्तान में ले जाता है और वहाँ उसे रेगिस्तान की राक्षसी आत्मा अज़ाजेल के लिए छोड़ देता है। फिर महायाजक खुद को पानी में डुबोता है, अपने वस्त्र बदलता है, और दो पाप बलियों, पहली बकरी और बैल की चर्बी को वेदी पर चढ़ाता है।

अंत में, बैल और बकरी के बचे हुए शवों को अन्य पुजारियों द्वारा शिविर के बाहर ले जाया जाता है और जला दिया जाता है। इस धार्मिक अनुष्ठान में दो आवश्यक घटक होते हैं। पहला, वे कार्य जो लोगों के पापों की अशुद्धता से पवित्र स्थानों को शुद्ध करते हैं।

और दूसरा, अनुष्ठान के वे पहलू जो लोगों को उनके पापों की अशुद्धता से शुद्ध करते हैं। यह पहला तत्व हमें अजीब लग सकता है, लेकिन प्राचीन इस्राएलियों की धारणा में, वाचा के विरुद्ध पाप केवल उस व्यक्ति को अशुद्ध नहीं करता था जिसने पाप किया था। एक ओर, उपासक के विवेक पर और दूसरी ओर, परम पवित्र स्थान में दया के आसन पर एक तरह का प्रतिबिम्बन प्रभाव होता था।

लैव्यव्यवस्था और संख्या दोनों के एक महान विद्वान, जैकब मिलग्राम ने लोगों के पापों के डोरियन ग्रे प्रभाव की तस्वीर को परम पवित्र स्थान में दया सीट पर कहा है। इस प्रकार, प्रायश्चित

के अनुष्ठान में दो अलग-अलग स्थानों में पाप को दूर करने के लिए यह दोहरा पहलू था, भगवान की उपस्थिति का स्थान और, निश्चित रूप से, उस उपासक का विवेक जिसने पहले स्थान पर पाप किया था। जिस तरह पहली वाचा में एक अभयारण्य और पंथ संबंधी नियम थे, उसी तरह उपदेशक का मानना है कि दूसरी वाचा का अपना संबद्ध अभयारण्य, स्वर्गीय एक और अपने स्वयं के बलिदान संबंधी संस्कार हैं।

पुराने अनुष्ठान मानचित्र, प्रायश्चित अनुष्ठान के दिन के मानचित्र की तरह, प्रोटोटाइप के रूप में कार्य करते हैं। वे वैचारिक कच्चे माल प्रदान करते हैं, लेकिन इन्हें नए और असंभव तरीकों से जोड़ा जाता है, वास्तव में, नए पुजारी द्वारा, यीशु द्वारा, जो स्वयं मध्यस्थ और भेंट दोनों बन जाता है। इसलिए, हम अगले पैराग्राफ में पढ़ते हैं, लेकिन मसीह, जो अच्छी चीजों का महायाजक बन गया, जो अस्तित्व में आया, एक बार और हमेशा के लिए बेहतर और अधिक परिपूर्ण तम्बू के माध्यम से प्रवेश किया, जो हाथों से नहीं बनाया गया है, यानी इस सृष्टि का नहीं, पवित्र स्थानों में, बकरियों और बैलों के खून के माध्यम से नहीं, बल्कि अपने स्वयं के खून के माध्यम से, शाश्वत मोचन का आविष्कार किया।

क्योंकि यदि बकरों और बैलों का लोहू और बछिया की छिड़की हुई राख शरीर की शुद्धि के लिए अशुद्ध लोगों को पवित्र करती है, तो मसीह का लोहू, जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर को निर्दोष चढ़ाया, हमारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि हम जीवते परमेश्वर की सेवा करें? लेखक फिर से पुष्टि करता है कि यीशु की सेवकाई एक श्रेष्ठ स्थान में होती है, जो हाथों से नहीं बनाया गया बड़ा और अधिक परिपूर्ण तम्बू है, अर्थात् इस सृष्टि से संबंधित नहीं है। यहाँ स्वर्गीय पवित्रस्थान का वर्णन एक बड़े और अधिक परिपूर्ण तम्बू के रूप में किया गया है, जो दृश्य और अदृश्य क्षेत्रों के बीच की दहलीज को पार करने से संबंधित पूर्णता भाषा की समझ का समर्थन करता है। स्वर्गीय मंदिर अधिक परिपूर्ण है क्योंकि यह अडिग स्थायी क्षेत्र में मौजूद है।

दूसरा, इस सृष्टि और उस क्षेत्र के बीच लेखक का अंतर जिसमें यीशु ने हमारे लिए अग्रदूत के रूप में प्रवेश किया है, इब्रानियों 9.9 के पढ़ने का समर्थन करता है जिसमें पुराने नियम के पंथ के मात्र प्रतिस्थापन से कहीं अधिक शामिल है। यह सृष्टि स्वयं आस्तिक और ईश्वर तक अंतिम पूर्ण पहुँच के बीच खड़ी है। इस प्रकार, यीशु को ध्यान के उस स्थायी स्थान में प्रवेश करने के लिए सृजित स्वर्ग से गुजरना होगा जो इस भौतिक दृश्य क्षेत्र से संबंधित नहीं है।

पवित्र स्थानों में जाने का रास्ता अब वास्तव में प्रकट हो चुका है। विश्वासी प्रार्थना और सामूहिक उपासना में उस स्थान तक जा सकते हैं, लेकिन इससे भी अधिक, जब मसीह दूसरी बार लौटेगा और उन्हें अपने साथ महिमा में ले जाएगा, तो वे व्यक्तिगत रूप से भी आ सकते हैं। यीशु की सेवकाई में श्रेष्ठ अनुष्ठान तत्व भी शामिल हैं।

वह बकरियों और बैलों के लहू के ज़रिए नहीं बल्कि अपने लहू के ज़रिए स्वर्ग में प्रवेश करता है। दूसरी वाचा का शुद्धिकरण माध्यम कहीं ज़्यादा महंगा है क्योंकि इसमें परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु शामिल है। इसलिए, इस लहू को अपवित्र करने के साथ-साथ इससे मिलने वाले लाभों के बारे में

बहुत कम सोचना भी एक बड़ा खतरा है, जैसा कि लेखक अध्याय 10, श्लोक 29 में संक्षेप में बताएगा।

यीशु के बलिदान का एक बार के लिए किया गया पहलू उस छुटकारे की गुणवत्ता को दर्शाता है जो उसे प्राप्त होता है। यह शाश्वत छुटकारे है क्योंकि यह हमेशा के लिए रहता है और इसे दोहराने की आवश्यकता नहीं होती। हमारे उपदेशक के लिए, दोहराव अकुशलता और अप्रभावीता का संकेत है।

अध्याय 9, श्लोक 13 से 14 में, लेखक पशु रक्त बनाम अध्याय 9, श्लोक 12 में यीशु के स्वयं के रक्त के विरोधाभास पर आधारित एक और कम-से-अधिक तर्क प्रस्तुत करता है। बैल और बकरियों के रक्त को बछिया की छिड़की हुई राख के साथ जोड़कर, लेखक योम किप्पुर पर प्रायश्चित के दिन चढ़ाए जाने वाले बलिदानों को संख्या 19 में वर्णित प्रक्रिया के साथ मिला देता है, जिसमें शव को छूने से होने वाली अशुद्धियों को दूर करने वाले पदार्थ की तैयारी की जाती है। यह जुड़ाव लेखक को यह दावा करने की अनुमति देता है कि पुराने नियम के तहत अनुष्ठानों के पूरे दायरे में केवल बाहरी अशुद्धता से निपटने की शक्ति थी, जैसा कि वह कहते हैं, शरीर के लिए नियम जो विवेक के संदूषण को दूर करने के लिए भेद नहीं सकते थे।

इस प्रकार प्रायश्चित दिवस के बलिदानों को बाहरी शुद्धिकरण के स्तर पर रखा गया है। यदि पशु रक्त का भौतिक पदार्थ बाहरी व्यक्ति की पवित्रता के लिए पर्याप्त है, तो लेखक का तर्क है कि अनन्त आत्मा के माध्यम से चढ़ाया गया मसीह का रक्त निश्चित रूप से आंतरिक व्यक्ति की सफाई के लिए पर्याप्त होगा। हमें ध्यान देना चाहिए कि, इस समय, नृविज्ञान में एक बदलाव लेखक के बाहरी व्यक्ति और आंतरिक व्यक्ति के विवेक के बीच के अंतर में परिलक्षित हुआ है।

यह मनुष्य के बारे में प्राचीन इस्राएल की अधिक एकीकृत अवधारणा से अलग है जिसमें किसी व्यक्ति के आंतरिक और बाहरी पहलुओं को मौलिक रूप से अलग नहीं किया जाता था। लेखक अधिक हेलेनिस्टिक अवधारणा की ओर बढ़ गया है जो मनुष्य के बाहरी और आंतरिक पहलुओं को एक दूसरे के विपरीत स्थापित करता है। लेविटिकस के संकलनकर्ताओं के दिमाग में त्वचा की सफाई और हृदय की सफाई के बीच एक रेखा खींचने का विचार नहीं आया होगा।

एक ही संस्कार व्यक्ति को शुद्ध कर सकता है। इब्रानियों के लेखक, पुरोहिती अनुष्ठान की भविष्यसूचक आलोचना का लाभ उठाते हुए इतिहास में कदम रखते हैं और साथ ही उनके पीछे सदियों के हेलेनाइजेशन का लाभ भी है, अब लेविटस 16 पद 30 पर सवाल उठा सकते हैं कि प्रायश्चित दिवस के संस्कार से कितनी सफाई मिलती है और यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह केवल एक बाहरी संस्कार है। हमें इस तर्क के दौरान यहाँ याद रखना चाहिए कि लेखक ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और वफ़ादारी के कारण क्रूस पर चढ़ने के बारे में बात कर रहा है।

हमें यीशु के रक्त को स्वर्ग में ले जाने की कल्पना नहीं करनी चाहिए, जैसे कि आध्यात्मिक वास्तविकताओं को किसी भी गुणवत्ता की सामग्री से शुद्ध किया जा सकता है। लेखक की यह जागरूकता कि यीशु का बलिदान अनन्त आत्माओं के माध्यम से होता है, यह संकेत दे सकता है कि लेखक हमें यीशु की मृत्यु के भौतिक पहलुओं से बहुत अधिक चिपके रहने नहीं देना चाहता,

क्योंकि हम इन पंथिक शब्दों में उस मृत्यु के प्रभावों पर विचार करते हैं। वह अपने श्रोताओं को इस सुसमाचार को समझने में सहायता करने के लिए रक्त जैसी वस्तुपरक भाषा का उपयोग करता है।

हमारे लिए यीशु की मृत्यु और परमेश्वर की उपस्थिति में उनके स्वर्गारोहण का अर्थ है कि विश्वासियों को परमेश्वर ने यीशु के कारण परमेश्वर के घराने में स्वीकार कर लिया है और वे परमेश्वर के दाहिने हाथ पर यीशु के जीवित रहने और उनके लिए मध्यस्थता करने के लाभ का आनंद लेते हैं। पुराने नियम के पंथ की भाषा इस तथ्य को समझने के लिए एक शक्तिशाली भाषा प्रदान करती है कि पवित्र परमेश्वर और अपवित्र मानवता के बीच खड़ी सभी बाधाएँ हटा दी गई हैं। इसलिए, यीशु की मृत्यु हमारे लिए होती है, लेकिन यहाँ हम एक नए तरीके से यह भी देखते हैं कि कैसे यीशु का स्वर्गारोहण भी कुछ ऐसा है जो यीशु के अनुयायियों की ओर से हुआ।

इब्रानियों 9, आयत 15-22 में, लेखक वाचा की भाषा में लौटता है और यीशु की मृत्यु के बारे में बात करता है, न केवल प्रायश्चित के ब्रह्मांडीय दिन के रूप में बल्कि यिर्मयाह 31 में वादा किए गए नए वाचा का उद्घाटन करने वाले संस्कार के रूप में भी। वाचा के उद्घाटन के संस्कार के लिए, जैसा कि पाठकों को निर्गमन 24 से पता होगा, रक्त के बहाए जाने की भी आवश्यकता होती है। इस प्रकार यीशु की मृत्यु दोहरा कर्तव्य करती है, प्रायश्चित को प्रभावित करती है और वाचा-आरंभ करने वाले बलिदान के रूप में कार्य करती है।

इस कारण से, वह एक नई वाचा का मध्यस्थ है ताकि पहली वाचा के विरुद्ध किए गए पापों की क्षमा के लिए मृत्यु हो, ताकि उन लोगों के लिए जिन्हें अनन्त विरासत का वादा प्राप्त करने के लिए बुलाया गया है। विरासत के साथ वाचा शब्द को जोड़ने से लेखक को ग्रीक शब्द डायथेके के दोहरे अर्थ पर खेलना शुरू करने की अनुमति मिलती है, जो वाचा और वसीयतनामा दोनों के रूप में है, यानी एक वसीयत। इस तरह, वह यीशु की मृत्यु की पुष्टि को वाचा के उद्घाटन बलिदान के रूप में और एक वसीयतकर्ता, एक वसीयत-निर्माता के निधन के रूप में एक साथ रख सकता है, जो वसीयतकर्ता की संपत्ति को उत्तराधिकारियों को देने में सक्षम बनाता है, जिससे परमेश्वर की इच्छा उन लोगों के लिए वैध हो जाती है जिन्हें परमेश्वर के उत्तराधिकारी नामित किया गया है।

जैसा कि वह पद 16 में आगे कहते हैं, जहाँ कोई वाचा या वसीयत होती है, वहाँ वाचा-निर्माता या वसीयत-निर्माता की मृत्यु को सामने लाना आवश्यक है। चूँकि परमेश्वर, निश्चित रूप से, मर नहीं सकता, इसलिए यीशु की मृत्यु को उस मृत्यु के रूप में सामने लाया गया है जो उत्तराधिकार के नियम को उत्तराधिकारियों के लिए प्रभावी बनाती है। लेखक पद 17 में फिर से वाचा और वसीयत के बीच की रेखा को बुनता है, क्योंकि वाचा की पुष्टि शवों के आधार पर होती है।

चूँकि वसीयतकर्ता के जीवित रहते हुए इसका कोई महत्व नहीं होता, इसलिए मृत शरीरों को आधार के रूप में प्रस्तुत करना जिसके आधार पर वाचा की पुष्टि की जाती है या उसे बाध्यकारी बनाया जाता है, वाचा बनाने वाले कुछ बलिदानों की याद दिलाता है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 15, श्लोक 9 से 21 में परमेश्वर और अब्राहम के बीच की वाचा वास्तव में जानवरों की लाशों के

बीच मृत शरीरों पर स्थापित की गई थी, जिसे अब्राहम ने अपने जीवन पर वाचा के अपने हिस्से को पूरा करने के लिए परमेश्वर की शपथ के संकेत में बांधा था।

लेखक फिर वसीयत कानून के विषयों पर वापस लौटता है, मानो अर्थ के इन दो ढाँचों को जोड़ने और आपस में जोड़ने का काम पूरा करना चाहता हो। चूँकि यह, यानी वाचा, वसीयतकर्ता के जीवित रहने तक लागू नहीं होती, इसलिए यह खंड पीड़ित के खून के बहने और मृत्यु को न केवल प्रायश्चित अनुष्ठानों से जोड़ता है, बल्कि वाचा के उद्घाटन से भी जोड़ता है। और वसीयत कानून का दंभ उपदेशक को यह बात समझाने में मदद करता है।

तर्क का मुख्य बिंदु यह है कि मसीह की मृत्यु इस वाचा के उद्घाटन को पूरा करती है, जिसके बारे में यिर्मयाह के उद्धरण में कहा गया है जिसे लेखक ने इब्रानियों अध्याय 8 में पढ़ा था। इब्रानियों 9 आयत 18 से 22 फिर निर्गमन 24 आयत 1 से 8 के समारोह को सारांशित और संशोधित करता है। इसलिए, न तो पहली वाचा का उद्घाटन रक्त के बिना हुआ था, क्योंकि मूसा द्वारा व्यवस्था में दिए गए प्रत्येक आदेश को सभी लोगों को बताए जाने के बाद, मूसा ने बैलों का खून पानी और लाल ऊन और जूफा के साथ पुस्तक और सभी लोगों पर छिड़का और कहा कि यह उस वाचा का खून है जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे लिए निर्धारित किया है। और उसने तम्बू और सभी पूजा के बर्तनों पर भी इसी तरह खून छिड़का। और लगभग हर चीज व्यवस्था के अनुसार खून से शुद्ध होती है, और खून बहाने के अलावा, कोई माफी नहीं है।

खून छिड़कना लोगों और परमेश्वर के लिए एक गवाह था कि वाचा अब दोनों पक्षों पर बाध्यकारी थी क्योंकि वे सभी इस पर सहमत थे। खून शांति बलिदान के रूप में चढ़ाए गए जानवरों से आया था। बलिदान लोगों के लिए भगवान की कृपा प्राप्त करने, उन्हें भगवान की कृपा का आश्वासन देने और इसलिए, उनकी भलाई के उद्देश्य से किया जाता है।

उपदेशक ने निर्गमन प्रकरण में कई विवरण जोड़े हैं। निर्गमन 24 में जल, लाल धागा और जूफा वाचा उद्घाटन संस्कार का हिस्सा नहीं हैं। न ही तम्बू या सभी धार्मिक बर्तनों पर छिड़काव किया गया है।

जैसा कि इब्रानियों 9:13 में हमारे लेखक ने टोरा में अलग-अलग स्थानों से अलग-अलग अवसरों और उद्देश्यों के लिए निर्धारित अनुष्ठानों को एक साथ मिला दिया है, ताकि इन कृत्यों की बाहरी प्रकृति पर जोर दिया जा सके और, अपनी तुलना में कई अलग-अलग अनुष्ठानों को शामिल करने के कारण, नई वाचा के एक अनुष्ठान में पूरी पंथ प्रणाली का स्थान ले लिया जा सके। लेखक ने मूसा के शब्दों के अपने पाठ में भी थोड़ा बदलाव किया है। निर्गमन 24, श्लोक 8 में, हम मूसा को बोलते हुए पढ़ते हैं, वाचा का खून देखो।

लेकिन इब्रानियों 9, 20 में लेखक ने मूसा से कहा कि यह वाचा का खून है। यह बाद वाला वाक्यांश सिनॉटिक गॉस्पेल, विशेष रूप से मैथ्यू और मार्क से ज्ञात अंतिम भोज की संस्था के शब्दों के साथ बहुत अधिक निकटता से प्रतिध्वनित होता है, जहाँ यीशु कहते हैं कि यह नई वाचा का मेरा खून है। इस प्रकार, यीशु की ऐतिहासिक मृत्यु को इस वाचा उद्घाटन अनुष्ठान में और अधिक मजबूती से बुना गया है।

इब्रानियों 9:21 में यह अवलोकन कि मूसा ने बैलों के लहू से न केवल लोगों को बल्कि पवित्रस्थान को भी शुद्ध किया, ठीक वैसे ही जैसे लेवी के महायाजक ने प्रायश्चित के दिन किया था, लेखक को सुझाव देता है कि बड़े महायाजक और बड़े वाचा मध्यस्थ के कार्य में भी एक समान तत्व शामिल होना चाहिए जो इब्रानियों 9, पद 23 से शुरू होने वाले बेहतर लहू से स्वर्गीय पवित्रस्थान को मसीह द्वारा शुद्ध करने के उनके तर्क के अगले भाग की ओर ले जाता है। पुराने नियम की वाचा के उद्घाटन अनुष्ठान के प्रोटोटाइप में इस अनुष्ठान तत्व की उपस्थिति अदृश्य क्षेत्र में प्रतिरूप में मसीह द्वारा उसी तत्व की सिद्धि के लिए प्रभावी रूप से सबूत बन जाती है। और इसलिए लेखक आगे कहता है कि लहू बहाए बिना, क्षमा नहीं मिलती। यह कहावत कार्डिनल नियम, लेवी के पुजारी प्रणाली के मूलभूत नियम को दर्शाती है, जैसा कि हम लैव्यव्यवस्था 17, 11 में पढ़ेंगे: लहू प्रायश्चित करने के लिए दिया जाता है। हालाँकि, हमारे लेखक ने इस कहावत को एक पुष्टि के साथ रखा है जिसे वह शीघ्र ही अध्याय 10 के आरंभ में कहेंगे: बैलों और बकरों के लहू से पापों को दूर करना असंभव है।

यह तनाव, प्रायश्चित करने के लिए रक्त की आवश्यकता, और पशुओं के रक्त द्वारा पापों को प्रभावी रूप से दूर करने की असंभवता, एक साथ मिलकर, पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए मानव बलिदान की आवश्यकता को जन्म देती है, जो यीशु की मृत्यु में दिया गया बलिदान है। यह कुछ ऐसा है जिसका संकेत लेखक ने पहले ही अध्याय आठ, पद तीन में दिया है। प्रत्येक महायाजक को भेंट और बलिदान चढ़ाने के लिए नियुक्त किया जाता है, इसलिए इस व्यक्ति के पास भी कुछ चढ़ाने के लिए होना आवश्यक है।

उस भेंट की प्रकृति लेखक की चर्चा का केंद्रबिंदु बन जाएगी, जो आगे आने वाले खंडों में होगी। लेखक अपने उपदेश के अब नौवें अध्याय को यीशु के स्वर्गारोहण के लौकिक और अनुष्ठानिक महत्व पर ध्यान केंद्रित करके समाप्त करता है। और इसलिए हम पढ़ते हैं, एक तरफ यह आवश्यक था कि स्वर्ग में वास्तविकताओं की छाया इन बलिदानों के माध्यम से शुद्ध की जाए, लेकिन स्वर्गीय वास्तविकताओं को इनसे बेहतर बलिदानों के साथ शुद्ध किया जाना चाहिए।

उपदेशक रक्त से सांसारिक निवास को शुद्ध करने की आवश्यकता को स्वीकार करता है, जो प्रायश्चित अनुष्ठान के दिन, साथ ही वाचा उद्घाटन सेवा की एक प्रमुख विशेषता थी। फिर से, हम पवित्रतम स्थान में अशुद्धता के निर्माण की धारणा, लोगों के पापों के बारे में भगवान की उपस्थिति में उत्तेजक अनुस्मारक, और उसी के अनुष्ठान शुद्धिकरण की आवश्यकता के बारे में जानते हैं। यदि अनियंत्रित छोड़ दिया जाता है, तो पवित्र स्थान में भगवान की उपस्थिति में लोगों के पापों की याद दिलाने का यह निर्माण राष्ट्र के लिए आपदा का कारण बनेगा, या तो भगवान की पवित्रता अशुद्धता और उसके कारण को जलाने के लिए प्रकट होगी या पवित्र भगवान एक प्रदूषित अभयारण्य से हट जाएंगे और इस प्रकार लोगों से अपनी सुरक्षा और प्रावधान भी वापस ले लेंगे।

इब्रानियों के लेखक ने अध्याय नौ, श्लोक 23 में एक विरोधाभास का निर्माण किया है, जो अध्याय नौ, श्लोक 13 और 14 के छोटे से बड़े तर्क को याद दिलाता है। जिस तरह नए संस्कारों में पापी की बाहरी सतह के बजाय विवेक को अधिक प्रभावी रक्त से शुद्ध करना शामिल था, उसी तरह

शाश्वत क्षेत्र में बेहतर अभयारण्य को भी बेहतर रक्त के माध्यम से शुद्ध किया जाना चाहिए। स्वर्गीय पवित्र स्थान की अशुद्धता परमेश्वर के सिंहासन के सामने परमेश्वर के विरुद्ध मानवीय अपमान की स्थायी याद दिलाती है।

यीशु द्वारा स्वर्गीय पवित्र स्थान को शुद्ध करना ईश्वर के वादे का अनुष्ठानिक कार्यान्वयन है, मैं उनके पापों को फिर कभी याद नहीं रखूँगा, जिसे यिर्मयाह अध्याय 31, श्लोक 34 में व्यक्त किया गया है। यह सब तब यीशु के स्वर्गारोहण के लिए एक व्याख्यात्मक रूपरेखा प्रदान करता है, यीशु की कहानी का एक पहलू जो ईसाई धर्मशास्त्र में उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के रूप में बड़ी भूमिका नहीं निभाता है। जैसा कि लेखक आगे कहते हैं, मसीह ने हाथों से तैयार किए गए पवित्र स्थानों में प्रवेश नहीं किया, जो वास्तविक लेखों के प्रतिरूप हैं, बल्कि स्वर्ग में ही, अब हमारी ओर से ईश्वर के सामने प्रकट होने के लिए।

यहाँ, हम लेखक की ओर से शब्दावली के सूक्ष्म परिवर्तन को देखते हैं। आम तौर पर, पुराना नियम प्रकार या प्रोटोटाइप प्रदान करता है, और यीशु और उसका कार्य प्रतिरूप प्रदान करता है। प्रकार पूर्वरूप प्रस्तुत करता है, प्रतिरूप उस पैटर्न का अनुसरण करता है और उसे पूर्ण करता है।

हालाँकि, सांसारिक निवासस्थान को प्रतिरूप कहते हुए, लेखक श्रोताओं को याद दिला रहा है कि स्वर्गीय मंदिर सांसारिक प्रति के निर्माण से पहले अस्तित्व में था, वास्तव में, सृष्टि से पहले, जैसा कि हमने अध्याय आठ, श्लोक पाँच में सुना। स्वर्गीय पंथ और सांसारिक संस्कारों के बीच का संबंध इस बिंदु पर उलट जाता है। सांसारिक संस्कार, वास्तव में, स्वर्गीय पंथ के पैटर्न को प्रतिबिंबित करते हैं।

लेवी के पुजारियों द्वारा सेवा किया जाने वाला पवित्र स्थान केवल मानव हाथों द्वारा बनाई गई एक प्रति है, जबकि यीशु, अपने स्वर्गारोहण द्वारा, वास्तविक चीज़ में प्रवेश कर चुका है, जो परमेश्वर के निवास का सच्चा स्थान है, और इसलिए, मध्यस्थता के लिए वास्तविक या अधिक प्रभावी स्थान है। यहीं पर वह परमेश्वर की उपस्थिति से पाप की याद को मिटाता है, वह याद जिसने ईश्वर तक मानवीय पहुँच को कलंकित और बाधित किया है। यीशु की ओर से उसी कार्य ने यिर्मयाह द्वारा कही गई नई वाचा के उद्घाटन को पूरा किया।

प्रायश्चित और वाचा के बीच संबंध यहाँ इस तथ्य से सुगम होता है कि यिर्मयाह की नई वाचा विशेष रूप से परमेश्वर द्वारा पापों को याद न रखने के बारे में है। इस प्रकार यीशु की मृत्यु को हमारे लेखक ने दोनों पक्षों, परमेश्वर और मानवता के लिए गवाही के रूप में लिया है, कि यह नई वाचा प्रभावी है। निर्गमन 24 और यहाँ वाचा के मध्यस्थ द्वारा उचित रूप से एक गवाही दी गई है।

इस प्रकार, फिर से, न केवल यीशु की मृत्यु हमारे लिए है, बल्कि उसका स्वर्गारोहण भी हमारे लिए है। इब्रानियों 9, आयत 25 और 26 में एक तीसरा विरोधाभास आता है, जो यीशु के एकल बलिदान और लेवी महायाजक के वार्षिक दोहराए जाने वाले बलिदानों के बीच के अंतर पर लौटता है। यीशु ने स्वर्ग में प्रवेश किया, उद्धरण, खुद को कई बार बलिदान करने के लिए नहीं,

जैसा कि महायाजक हर साल दूसरे के खून के साथ पवित्र स्थान में प्रवेश करता है; तब से, उसके लिए दुनिया की नींव से कई बार पीड़ित होना आवश्यक था।

लेकिन अब वह अपने बलिदान के माध्यम से पाप को हमेशा के लिए मिटाने के लिए युगों की पराकाष्ठा पर प्रकट हुआ है। उपदेशक ने पहले ही अध्याय नौ, श्लोक सात से 14 में पुष्टि की थी कि यीशु का एक बार का बलिदान वह सब कुछ पूरा करता है जो प्रायश्चित के दिन के वार्षिक अनुष्ठान नहीं कर सकते थे। अब, वह इस विरोधाभास के बिंदु पर वापस आता है ताकि इसे यहाँ और अध्याय 10, श्लोक एक से 10 में अगले पैराग्राफ में और अधिक विस्तार से विकसित किया जा सके।

यहाँ सांसारिक उच्च पुजारियों द्वारा दूसरे के रक्त, बलि के पशुओं के रक्त और यीशु द्वारा स्वयं के बलिदान के बीच का अंतर न केवल यीशु के बलिदान की महान गुणवत्ता को दर्शाता है, बल्कि मध्यस्थता के इस कार्य में यीशु के निवेश की अधिक डिग्री को भी दर्शाता है। उसने अपने ग्राहकों को परमेश्वर के अनुग्रह तक पहुँच बहाल करने के लिए सचमुच खुद को समर्पित कर दिया। यह फिर से लेखक की मंडली की ओर से कृतज्ञता जगाने और कृतज्ञता बनाए रखने के लिए काम करना चाहिए।

इसे विश्वासघात के विरुद्ध एक निवारक के रूप में भी काम करना चाहिए, एक मध्यस्थ के प्रति उचित प्रतिफल देने में विफल होने के विरुद्ध जो इतना निवेशित और आत्म-समर्पित है। इस बिंदु पर, युगांतिक आयाम पंथ संबंधी तर्क में प्रवेश करता है, जैसा कि यह अध्याय 10, श्लोक 13 में फिर से होगा। यीशु का पुरोहिती कार्य न केवल इतिहास के भीतर बल्कि इतिहास के अंत में भी होता है।

वह युगों की पराकाष्ठा पर प्रकट हुए हैं। यह उस प्रभाव को पुष्ट करता है जिसे उपदेशक अपने श्रोताओं पर इस उपदेश के आरंभ से अंत तक बनाना चाहता है। वे अपनी विरासत की दहलीज पर खड़े हैं, अपने विश्राम में प्रवेश करने के लिए, एक अडिग राज्य में।

मसीह के शासन के प्रति वफादार लोगों को पुरस्कृत करने और उनके शत्रुओं को वश में करने का समय आ गया है। ईसाइयों को केवल थोड़े समय के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं पर अडिग रहना है, जैसा कि लेखक अध्याय 10, श्लोक 36 से 39 में स्पष्ट रूप से कहेगा। लेखक अपने पंथ-केंद्रित विवरण पर लौटने से पहले इस युगांतकारी आयाम को विकसित करने के लिए कुछ समय लेता है।

जिस तरह मनुष्य के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना तय है, उसी तरह मसीह भी, जिसने बहुतों के पापों को उठाने के लिए एक बार खुद को अर्पित किया, उन लोगों के उद्धार के लिए पाप से जुड़े बिना दूसरी बार प्रकट होगा जो उसका बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। मृत्यु के बाद न्याय के बारे में कहावत लेखक की रणनीतिक चेतावनी को पुष्ट करती है कि समूह को छोड़ने का मतलब खतरे से बचना नहीं है। वे उस ईश्वर द्वारा जवाबदेह ठहराए जाएंगे, जिसके बेटे को उन्होंने ठुकरा दिया।

मृत्यु के पश्चात के निर्णय के संकट का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए श्रोता का पूरा ध्यान उस पर होना चाहिए, न कि अपने पड़ोसियों की शत्रुता के कारण होने वाले अपेक्षाकृत छोटे संकटों की चिंता में अपनी दृष्टि को भटकने देना चाहिए। जिन लोगों ने यीशु के उपकार के महँगे कार्य को स्वीकार किया है और निष्ठा और कृतज्ञता के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की है, वे मसीह के दूसरी बार आने पर उद्धार, सोटेरिया, मोक्ष के उपहार का आनंद लेंगे। यहाँ मोक्ष शब्द का प्रयोग महत्वपूर्ण है।

फिर से, हम देखते हैं कि यह लेखक मोक्ष को भविष्य की भलाई के रूप में सोचता है, जबकि उदाहरण के लिए, इफिसियों 2, आयत छह से आठ में इस शब्द का उपयोग विश्वासी के अतीत में स्थित किसी घटना का वर्णन करने के लिए किया गया है। लेखक ने जिस पादरी की ज़रूरत को संबोधित किया है, अर्थात् एक दूरदर्शी दृष्टिकोण को उत्तेजित करना जो अंत तक बना रहेगा, वह श्रोता का ध्यान परमेश्वर के उद्धार या मसीह यीशु में रहने वालों के उद्धार के इस भविष्य के आयाम की ओर आकर्षित करके अच्छी तरह से पूरा किया जाता है। नए नियम के लेखन के लेखक अनुभवों की एक विस्तृत श्रृंखला की बात करते हैं जो एक साथ मिलकर मोक्ष की पूर्ण प्रक्रिया का निर्माण करते हैं।

मसीह को स्वीकार करके परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप, बपतिस्मा के माध्यम से परमेश्वर के लोगों में शामिल होना, जीवन की नवीनता में चलना, और उस प्रलय से मुक्ति पाना जो इस वर्तमान बुरे युग को समाप्त कर देगा। परमेश्वर के उद्धार कार्य की इस व्यापक समझ को किसी एक पहलू में समेटने से वह प्रभाव कमजोर हो जाता है जो उद्धार की बाइबलीय अवधारणा का ईसाइयों के जीवन पर होना चाहिए, एक ऐसी अवधारणा जो न केवल हमें पीछे की ओर ले जाती है कि परमेश्वर ने हमारे जीवन में पहले से क्या किया है, बल्कि हमें आगे की ओर भी ले जाती है, जिससे हम उन वफादार लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्यों के लिए तरसते हैं जो कृतज्ञता और श्रद्धापूर्ण आज्ञाकारिता के अपने जवाब को जीना जारी रखते हैं।